गुलाबचंद प्रसाद अग्रवाल महाविद्यालय

सड़मा, छत्तरपुर, पलामू (झारखण्ड़)

"छत्तरपुर अनुमंडल स्थित देवगन गांव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन"

स्नातक समाजशास्त्र, प्रतिष्ठा सेमस्टर-**VI** के अध्ययन
पेपर **-14** पत्र अन्तर्गत क्षेत्रीय अध्ययन
(सत्र्- **2018-2021**)

सर्वेक्षण कर्ता

नाम :– मुनीता कुमारी
क्रमांक :– **18BA-1409932**
पंजीयन :– **NPU/17998/18**
सत्र् :– **2018-2021**

निर्देशक

राज मोहन (सहायक प्राध्यापक)
समाजशास्त्र विभाग
गु0 प्र0 अ0 महाविद्यालय, सड़मा
छत्तरपुर, पलामू (झारखण्ड़)

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **मुनिता कुमारी** ने परिपेक्ष्य में **''छत्तरपुर अनुमंडल स्थित देवगण गांव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन''** शीर्षक अनुसंधान, स्नातक प्रतिष्ठा समाजशास्त्र विभाग गुलाबचंद प्रसाद अग्रवाल महाविद्यालय की **छात्रा** क्रमांक 18BA-1409932 सत्र् 2018-2021 मेरे निर्देशन में संपन्न किया।

तथ्यों एवं आंकड़ों का संकलन सत्य के आधार पर अधिकृत है।

मुख्य पर्यवेक्षक

राज मोहन (व्याख्याता)

समाजशास्त्र विभाग

गु0 प्र0 अ0 महाविद्यालय, सड़मा,

छत्तरपुर, पलामू, झारखण्ड़

नाम :– मुनीता कुमारी

क्रमांक :– 18BA-1409932

पंजीयन सं0 :– NPU/17998/18

सत्र् :– 2018-2021

घोषणा

मैं एतद् द्वारा घोषणा करता/करती हूँ कि मेरे द्वारा किया गया परियोजना जिसका शीर्षक "**छत्तरपुर अनुमंडल स्थित देवगण गांव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन**" हैं। समाजशास्त्रीय अध्ययन समाजशास्त्र के प्रतिष्ठा उपाधि कार्यक्रम का आंशिक भाग हैं।

यह मेरा स्वयं का मूल कार्य है, तथा किसी अन्य अध्ययन कार्य की शर्त को पुरा करने के लिए न तो किसी संस्था में न तो किसी महाविद्यालय में पहले भेजा है।

नाम :– मुनीता कुमारी

क्रमांक :– 18BA-1409932

पंजीयन सं0 :– NPU/17998/18

सत्र् :– 2018-2021

आभार–ज्ञापन

क्षेत्रीय कार्य के इस प्रतिवेदन में मैने स्वयं और सहयोगियो तथा निर्देशक के हयोग से आठ दिवसीय क्षेत्रीय अध्ययन के बाद तैयार किया हैं। यदि मुझे कतिपय शिष्ठ लोगों से इन कार्ये को पुरा करनें में यर्थोचित सहयोग नही मिलता तो मैं पने शोध कार्यो को पुरा नही कर पाता। इन लोगो को विशेष रूप से याद करते ए यह चाहता हूँ कि कोई भी कार्य किसी व्यक्ति के सहयोग के बिना संभव नही ।

सर्व प्रथम मैं अपने महाविद्यालय के सचिव एंव प्राचार्य के प्रति अपना/अपनी तज्ञता प्रकट करता हूँ, क्योकि उन्होने अपने महाविद्यालय में समाजशास्त्र का विभाग खोलकर प्रतिष्ठा के हम सभी छात्र एंव छात्राओं के लिए अवसर प्रदान किया।

मैं अपने शोधकर्ता के निर्देशक प्रो. राज मोहन (व्याख्याता) समाजशास्त्र के प्रति अपना आभार सच्चे दिल से प्रकट करता हूँ। क्योंकि उन्होने सब समाजशास्त्र प्रतिष्ठा के छात्र एंव छात्राओं को सही सुझाव निर्देश एवं अपनी शुभकामना दिया है। महाविद्यालय के शिक्षक, शिक्षकोत्तर, कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जो ज्ञात अज्ञात रूप से सहयोग कर मेरा क्षेत्रीय कार्य पुरा करने में सहयोग किया।

उन महान चितंक समाज शास्त्रीयों का आभारी हूँ, जिनकी सहायता से समाज शास्त्रीय ज्ञान मिला तथा पुस्तकें उपलब्ध हो सकी तथा समाजशास्त्र के प्रति विशेष अभिरूची पैदा हुई।

मैं पलामू छत्तरपुर के देवगण ग्रामवासियों के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ, जिनको सहयोग के बिना मेरा प्रतिवेदन अधुरा रह जाता। उन्होने मुझे अनुसंधान के कार्यो में उदारता पूर्वक समय देकर तथ्यों के संकलन में अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया। मैं अभिभाव अपने मित्रों एवं शुभचिंतकों के प्रति भी आभार व्यक्त करता/ करती हूँ।

Munita Kumari

छात्र/छात्रा का हस्ताक्षर

अनुक्रमिका

अध्याय एक :- क्षेत्रीय अध्ययन का परिचय

अध्याय दो :- भूमिका

अध्याय तीन :- अध्ययन विधि

अध्याय चार :- अध्ययन का उद्देश्य

अध्याय पाँच :- सारणी एव विश्लेषण

अध्याय छः :- सुझाव एवं निष्कर्ष

अध्याय सात :- परिशिष्ट

संदर्भ फोटो

एवं भू मैप

अध्याय एक

क्षेत्रीय अध्ययन का परिचय

छोटी-छोटी पहाड़ियों, नदी-नालों एवं पेड़ों-झुरमुटों से घिरा गांव देवगन मध्य काल से रातत्व, इतिहास और अध्यात्म के साक्ष्यों को अपनी कोख में छिपाये सदियों से वीरान पड़ा आ है। सुरम्य वादियों की गोद में अवस्थित यह ऐतिहासिक गांव एक ओर मध्यकालीन भव के ध्वंसावशेषों, धराशायी मंदिरों तथा साबूत एवं खंडित प्रस्तर-मूर्तियों से भरा पड़ा है, तो दूसरी ओर खरवारों, रक्सेलों,चेरों, मुगलों एवं अंग्रेजों के शासन का मूक साक्षी भी रहा है। मध्यकाल में यहां की पहाड़ियों एवं स्मारकों के सीने तीक्ष्ण तीरों, तेग-तलवारों तथा गोले उगलते तोपों से छलनी हुए हैं। तोपों के गोलों के निशान तो मिले ही हैं, साथ-साथ लोगों को जमींदोज गोले भी मिले हैं। संप्रति इस वीरान धरती को देखकर सहसा विश्वास नहीं होता कि यहां कभी खून की नदियां भी बही होंगी। बहरहाल गौरव और वैभव को बतौर यादगार समेटे तथा साक्ष्य के रूप में अपनी कोख में पुरावशेषों को भरे-पड़े यहां की समृद्ध धरती अपनी पुरातन अस्मिता की भीख मांग रही है,मगर विडंबना है कि इस बस्ती की सुध लेने वाला कोई नहीं है।

पलामू जिला मुख्यालय से 60 किमी, छतरपुर अनुमंडल मुख्यालय से 10 किमी, पिपरा प्रखंड मुख्यालय से 02 किमी तथा जपला से लगभग 26 किमी दूर देवगन धाम

ध्यकालीन इतिहास की एक श्रेष्ठ धरोहर है। छतरपुर प्रखंड अंतर्गत स्थित यह गांव बतरे दी का उदगम है। द्रष्टव्य है कि बतरे बटाने नदी की सहायक है और बटाने पुण्यमयी पुनपुन दी की। लगभग 40 एकड़ में फैला यह देवगन धाम परिक्षेत्र अनेक खंडहरों, प्रस्तर-लाकृतियों तथा मध्यकालीन प्रस्तर-मूर्तियों से भरा पड़ा है, जो सुरक्षा एवं रख-रखाव के भाव में नष्टप्राय होने के कगार पर हैं। यहां के खंडहरों को देखने से स्पष्ट होता है नका निर्माण स्थानीय पहाड़ियों से शिलाखंडों को काटकर एवं तराशकर किया गया है। ग्नावशेषों में पुरातनकालीन ईंटों का प्रयोग किया गया है। प्रतीत होता है कि पुरातन ईंटों से निर्मित संरचना को नष्टकर तराशे गए पत्थरों के प्रयोग करके नयी संरचना का निर्माण किया ाया है। युद्ध और सतत संघर्ष के गवाह बनी लघु पहाड़ियों (टोंगरा) की बनावट अनूठी है।

देवगन का नामकरण

बस्ती का नाम देवगन कोई नया नहीं है। निश्चित रूप से यह नाम मध्यकालीन है, क्योंकि चेरो राजाओं, मुगलों एवं अंग्रेजों के दस्तावेजों में यही नाम मिलता है। अंतर इतना ही है कि इस नाम का पहले एक जागीर या स्टेट हुआ करता था और अब एक बस्ती मात्र है। "देवगन' शब्द 'देवगण' का अपभ्रंश है, जिसका शाब्दिक अर्थ देवों का समूह है। मध्यकाल में 'देवों के समूह' से इस गांव का गहरा रिश्ता है। जपला से देवगन की दूरी मात्र 26 किमी है। उस समय यह क्षेत्र निश्चित रूप से प्रताप धवल के अधीनस्थ रहा होगा। मध्यकाल में खरवार जाति अपनी वीरता एवं सुशासन के लिए मशहूर थी। जैसे चेरो जाति को चेरपादा (आदरणीय चेर) कहकर सम्मानित किया गया है, उसी प्रकार देव उपाधि नवाजे जाने के

परांत 'खरवारों के समूह' को देवगण कहा जाता था। उस समय से इस क्षेत्र का नाम 'देवगन' ड़ गया हो तो कोई आश्चर्य नहीं। बाद में इस राज्य पर कायम होने वाले रक्सेलों तथा चेरों भी इस नाम को जारी रखा।

देवगन नाम होने की दूसरी संभावना यह है कि देव-प्रतिमाओं की अधिकता की वजह बाद में बसने वाली जातियों ने इसका नाम देवगन रखा हो। संभव है कि बौद्ध स्थलों के परांत सनातन धर्म के पूजा स्थलों में इसे तब्दील कर दिया गया हो। बाद में विधर्मियों द्वारा इसे विनष्ट किया गया हो। उन्हीं देवी-देवताओं की प्रतिमाओं की बहुलता के कारण इस क्षेत्र का नाम कालांतर में देवगन पड़ा हो, तो कोई आश्चर्य नहीं। संभवतः यह नाम रक्सेलों द्वारा दिया गया है। । वैसे यह देवगन नाम का गांव देश भर में शायद अकेला है।देश भर में देव शब्द से बने नाम अनेक हैं। झारखंड में देवघर,देवगांव (गुमला), देवगाना (गढ़वा) आदि,

जिले का परिचय

झारखण्ड राज्य भगवान बिरसा मुण्डा कि पूण्यतिथि 15 नवम्बर 2000 ई० में भारतीय राज्य के रूप में अस्तित्व के रूप में आया। पृथक राज्य का विचार सर्वप्रथम 1983 में प्रसिद्ध हॉकी खिलाडी श्री जयवान सिंह द्वारा स्थापित आदिवासी महासभा को व्यक्त किया था। इसके बाद विभिन्न आंदोलनों के कारन 2 अगस्त 2000 को बिहार राज्य पूर्ण गठन विधेयक लोकसभा में पेशा किया गया जिसे 11 अगस्त 2000 को स्वीकृति प्रदान करने हेतु प्रस्तुत किया गया। जिसे 15 अगस्त 2000 को स्वीकृति प्राप्त हुई तथा जिसकी राजधानी राँची घोशित किया गया।

झारखण्ड राज्य का पलामू जिला 23'5' और 24'8' अकक्षांश उत्तर एवं 838° पूर्व देशान्तर पर अवस्थित है। पलामू राँची से 165 किलोमीटर दुर 4606 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। जिले की मुख्य नदियाँ अमानत एवं कोयल है। जिला मुख्यालय डाल्टनगंज है।

ासनिक दृश्टिकोण से कुल 3 अनुमण्डल 20 प्रखण्ड 283 पंचायत एवं 1918 गांव है। गणना के अनुसार क्षेत्र की जनसंख्या 1936319 है जो झारखण्ड राज्य की कुल जनसंख्या लगभग 5.7 भाग है।

पलामू जिला कर्क रेखा के निकट होने के कारण यह उष्णकटिबंध में पड़ता है। अतः मई-न माह में यहाँ भीशण गर्मी तथा दिसम्बर-जनवरी में ठंड भी अधिक पड़ती है। मौनसूनी लवायु क्षेत्र में अवस्थित होने के कारण इस जिला में प्रयः 15 जून से 15 अक्टूबर तक वर्षा ती है।

नसंख्या	:-	1936319
ुष	:-	1003876
ी	:-	932443
ाम जनसंख्या	:-	1710612
ाहरी जनसंख्या	:-	225693
त्रफल	:-	5043.8 वर्ग एकड़
नुमंडल	:-	03
खण्ड	:-	20
चायत	:-	283
ांव	:-	1918
न क्षेत्र	:-	1281434 हेक्टेयर
मुद्र तल से ऊ0	:-	222 मी०
ृषि योग्य भूमि	:-	173553
खनिज संम्पदा	:-	ग्रेफाइट, ग्रेनाइट, कोयला, मैगनेटाइट आदि
ामान्य वर्षा	:-	1257.8 मी0 मी0

जीविकोपार्जन के मुख्य साधन :- खेती, मजदुरी, घरेलु उद्योग, धंधे

ुख्य उद्योग :- आदित्य बिरला केमिकल्स प्रा0 लि0 (रहला)

क्षरता दर :- 65.5 प्रतिशत साक्षरो की कुल संख्या 1061012 है।

ा पहुंचे :- सड़क मार्ग व रेल मार्ग

वे स्टेशन :- डाल्टेनगंज स्टेशन

गीभूत शिक्षा व्यवस्था :-

ीलाम्बर पीताम्बर विश्वविद्यालय- 01, पीताम्बर महाविद्यालय- 04, स्थायी हाविद्यालय- 05, अस्थायी महाविद्यालय- 11, बी0 एड महाविद्यालय- 14, बी० पी एड हाविद्यालय- 01, इंजिनियरिंग- 02, डेन्टल महाविद्यालय- 01, लॉ कॉलेज- 01

लामू के दर्शनीय स्थल :-

) काली मंदिर रेड़मा, गरूद्वारा श्री गुरूसिंह सभा, भांति की मनी महागिरजाघर, दनीनगर का हृदय स्थली छहमहान, आस्था का प्रतिक चेगौना धाम, महाभारत कालीन ोम चूल्हा, हैदर नगर के देवी धाम में लगता भूत मेला

2) पर्यटक स्थल- नेतरहाट, बेतला, अमझरिया, केचकी जलप्रपात (बूढ़ाघाघ, धधरी, गुटाम ाघ, हिसातू घाघ, गूंगा घाघ, विष्णुधारा, परसडीह प्रपात

अध्याय दो

भूमिका

यूं तो पलामू प्रमंडल में अनेक ऐतिहासिक धरोहर हैं, मगर देवगन की धरोहर थोड़ी लग और महत्त्वपूर्ण है। इसे मध्ययुगीन झारखंड के इतिहास के लिए मील का पत्थर कहा ाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। ज्ञात हो कि देवगन प्राचीन काल से आबाद रहा है, गर सत्ता के केंद्र के रूप में यह स्थल पहली बार मध्य काल में उभरा। सामरिक दृष्टि से हत्वपूर्ण एवं महफूज यह स्टेट मध्य काल में ऐतिहासिक, पुरातात्विक तथा आध्यात्मिक रूप से समृद्ध रहा है। यहां के स्तूपाकार टोंगरे, पहाड़ियां, जंगल, नदी-नाले आदि मिलकर इसके सौंदर्य में कल भी चार चांद लगाते थे और आज भी। रक्शेल और चेरो राजवंशों की कभी राजधानी रह चुका देवगन का अस्तित्व आज एक बस्ती के रूप में विद्यमान है। विडंबना है कि हाथी की चिंघाड़ तथा घोड़ों की टाप से गुंजायमान यह अंचल आज विस्मृति,घोर उपेक्षा, पिछड़ेपन तथा मुफलिसी का शिकार है।

प्राचीन पुरातात्विक महत्व के अवशेषों, मध्यकालीन ध्वंसावशेषों, साबूत एवं खंडित प्रस्तर मूर्तियों तथा ऐतिहासिक स्मृतियों को अपने अंचल में समेटे यह मध्ययुगीन रियासत खरवारों,रक्सेलों,चेरों, मुगलों तथा अंग्रेजों के शासनों और संघर्षों की मूक साक्षी रही है। चूंकि खरवार राजवंश के प्रतापी शासक प्रताप धवल देव ने 12 वीं शताब्दी में देवगन से मात्र 26 किमी दूर स्थित जपला को अपनी राजधानी बनायी थी, इसलिए ऐसा समझा जाता है कि उस समय देवगन उनका प्रशासकीय केंद्र रहा होगा क्योंकि देवगन एक मध्यकालीन मार्ग

र अवस्थित था, जो गया, खड़गडीहा, जपला और रोहतास गढ़ को जोड़ता था। 14 वीं ताब्दी में सरगुजा से आए रक्सेलों ने इसे राजधानी के रूप में विकसित किया। 16 वीं ताब्दी में शेरशाह के काल में (संभवतः 1539 ई में) भगवंत राय ने देवगन में ही चेरो जवंश की नींव डाली। बाद में चेरो-शासक ने पलामू किला को राजध पानी के रूप में विकसित किया।

पहाड़ियों की सुरम्य वादियों में बसे इस अंचल को पहली बार हजारों वर्षों पूर्व असुर नजाति के लोगों ने आबाद किया था। बाद के कालखंड में मुंडा, खड़िया, उरांव,माई आदि नजातियों ने भी इस स्थल को अपना आश्रय स्थल बनाया आज भी माली नामक पहाड़ी के ीचे उनकी बस्तियों के अवशेषों के साथ-साथ उनकी कब्रों के रूप में कई मेगालिथ विद्यमान ैं।

प्राचीन काल से मध्य काल तक देवगन अनेक जनजातियों एवं उनकी संस्कृतियों को आत्मसात किया है। खरवार और चेरो जनजातियों के देवी-देवताओं की पूजा स्थानीय लोग आज भी करते हैं। यहां बौद्ध स्तूप एवं चैत्य जैसी संरचनाएं मिलने से प्रतीत होता है कि सत्ता का केंद्र बनने के पूर्व यह स्थल बौद्ध धर्म से संबद्ध रहा है। देवगन- धाम मंदिर की बनावट एक चैत्य से मिलती जुलती है। अगर ऐसा हुआ तो निश्चित रूप से देवगन को गुप्तकालीन माना जा सकता है।

विगत दो दशकों से देवगन से मैं सम्बद्ध रहा हूं। अपनी टीम के साथ वहां आना-जाना लगा रहा। यह मेरी शोधपरक पुस्तक दो दशकों के अध्ययन का परिणाम है। इन कालावधि में मैंने जो पाया,उसी को एक पुस्तक के रूप में समर्पित किया हूं। अभी तक इस महत्वपूर्ण

विरासत पर स्वतंत्र रूप से कोई किताब नहीं आई है। सच यह है कि खरवार,रक्सेल और चेरो राजवंशों पर गहन शोध और अध्ययन का घोर अभाव है।देश की आजादी के उपरांत मैं अपने बुधी पाठकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों, शोधकर्ताओं तथा सुहृदों से अनुरोध करता हूं कि वे अपने खट्टे-मीठे या तीखे बहुमूल्य अनुभवों तथा समुचित ज्ञान से मुझे अवश्य अवगत करायें, ताकि अगले संस्करण में आपके उचित साक्ष्यों, परामर्शों एवं तर्कों को रखा जा सके।

प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से पुस्तक-लेखन में सहयोग करने वाले उन तमाम ग्रामीणों/शुभचिंतकों का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूं।

धन्यवाद ।

अध्याय तीन

अध्ययन विधि

मानव समाज एक जटिल समग्रता है, जिसमें एक दुसरे से भिन्न इतनी अधिक अंतरक्रियाओं तथा प्रक्रियाओं का समावेश होता है कि उन्हें व्यवस्थित रूप से समझे बिना समाज के वास्तविक रूप से समझने का दावा नहीं किया जा सकता है। अगस्त कॉम्ट से पहले एक अधिकांश विचारकों और दार्शनिकों की धारणा थी कि प्राकृतिक घटनाओ के समान सामाजिक घटनाओं का वैज्ञानिक आधार पर अध्ययन नहीं किया जा सकता। कॉम्ट ने ऐसी भ्रमपूर्ण धारणाओं को दुर करतें अपने प्रत्यक्षवादी सिद्धांत के द्वारा यह स्पष्ट किया है कि सामाजिक घटनाओं का प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन, परीक्षण, वर्गीकरण तथा सामान्यीकरण वह प्रमुख आधार है, जिसके द्वारा सामाजिक घटनाओं का भी सामाजिक अध्ययन संभव है।

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी भाषा के सर्वे (Suruey) का हिन्दी रूपान्तरण है। यह दो विभिन्न स्थानों के शब्दों से मिलकर बना है। पहला शब्द (Sur) है, जिसकी उत्पत्ति फ्रेंच भाषा से हुई है। दुसरा शब्द (leeiv) है जो लैटिन भाषा से लिया गया है तथा इन दोनो का अर्थ क्रमश 'उपर' और 'देखना है। इस प्रकार (Suruey) का शब्दिक अर्थ किसी घटना को उपर से देखना है। वर्तमान समय में सर्वेक्षण के लिए इसी अर्थ को पर्याप्त नहीं समझा जाता, बल्कि एक पद्धति के रूप में सामाजिक सर्वेक्षण का उपयोग एक विशेष अर्थ में किया जाने लगा है। सर्वेक्षण का तात्पर्य एक ऐसी अनुसंधान प्रणाली से है जिसके अंतर्गत अध्ययनकर्ता से संबंधित इकाईयों का स्वयं अवलोकन करता है और पक्षपात रहित ढंग से तथ्यों को एकत्रित करके सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।

ामाजिक सर्वेक्षण का मुख्य उदेश्य

- सामाजिक तथ्यों का एकीकरण
- सामाजिक समस्याओं का अध्ययन
- सामाजिक समस्याओं का सामाधान
- सामाजिक घटनाओं का व्याख्या
- कार्य-कारण संबंध का ज्ञान
- परिकल्पना का निर्माण तथा परिक्षण
- सामाजिक सिद्धांतो का सत्यापन
- विकाश कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन
- जनमत का पुर्वानुमान

ामाजिक सर्वेक्षण एवं सामाजिक अनुसंधान की प्रकृति उद्देश्यो तथा पद्धतियों में इतनी धिक समानता है कि एक स्थान पर अक्सर दुसरे शब्दों का प्रयोग कर लिया जाता है। इन स्याओं को निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है।

> सामाजिक सर्वेक्षण तथा सामाजिक अनुसंधान दोनों का ही संबंध घटनाओं क व्यवस्थित रूप से अध्ययन करने से है।

सर्वेक्षण तथा अनुसंधान के अंतर्गत केवल वर्तमान तथ्यों का ही अध्ययन न करके नए तथ्यों को खोजने का भी प्रयत्न किया जाता है।

> अध्ययन प्रविधियों के दृष्टिकोण से भी सर्वक्षण तथा अनुसंधान एक दुसरे के समान है। उदाहरण के लिए अवलोकन, निर्देशन, प्रशनावली, अनुसूची, साक्षात्कार तथा व्यक्ति अध्ययन जैसी प्रविधियां का प्रयोग दोनों में समान रूप से महत्वपूर्ण है।

सामाजिक सर्वेक्षण के माध्यम से ही सामाजिक अनुसंधानक कर्ता अपनी परिकल्पनाओं की सत्यता जाँच करता है। इस दृष्टि कोण से भी सामाजिक सर्वेक्षण तथा अनुसंधान के बीच घनिष्ट संबंध है। सामाजिक सर्वेक्षण तथा अनुसंधान दोनो का उद्देश्य ज्ञान की वृद्धि के द्वारा

ामाजिक जीवन को अधिक प्रगतिशील और संगठित बनाना है। सामाजिक अनुसंधान एक ज्ञानिक योजना है, जिसका उद्देश्य तार्किक क्रमबद्ध पद्धतियां द्वारा नवीन तथ्यों का अन्वेशण था पुराने तथ्यों की पुनः परीक्षा एवं उनमें पाए जाने वाले अनुक्रमांक अंतः संबंधो कारण हित व्याख्याओ तथा उनको संचालित करने वाले स्वभाविक नियमो का करना है।

सामाजिक शोध में उपयोगी प्रबृधि

उपकल्पना / प्राककल्पना का निर्माण :-

उपकल्पना किसी विषय से संबंधित एक सामान्य अनुमान अथवा विचार है, जिनके संदर्भ में संपूर्ण अध्ययन किया जाता है। प्रारंभिक स्तर पर उक उपकल्पना अनुसंधान का कार्य मार्ग-निर्देशन करती अध्ययन के बीच में यह अनुसंधान कर्ता को इधर -उधर भटकाने से रोकती है तथा अध्ययन के अंत में यह उपयोगी निष्कर्ष प्रस्तुत करने तथा पूर्व निष्कर्षों का सत्यापन करने में सहायता देती है।

2 अगवाल अवलोकन :-

अवलोकन सामाजिक शोध की एक महत्वपूर्ण प्रविधि है इसका तात्पर्य उक विशेष विषय से संबंधित घटनाओं को व्यवस्थित रूप से देखना तथा अपनी बुद्धि और कुशलता के आधार पर घटनाओं के कार्य कारण संबंध को समझाता है।

3 अनुसूची :-

यह प्रश्नो की एक ऐसी लिखित सूची है, जिसे लेकर अध्ययनकर्ता उत्तरदाता के पास स्वयं जाता है और विभिन्न प्रश्नों को पूछ कर स्वयं ही उनके उत्तरो का आलेखन करता है। प्रथमिक सामग्री का समरूप करने के लिए अनुसूची एक ऐसी प्रविधि है जिसमे अवलोकन सत्कार तथा

श्नावली की विशेषताओं का समन्वय होता है। इसके अंतर्गत अध्ययनकर्ता प्रश्नों की एक निश्चित सूची लेकर उत्तरदाताओं से सत्कार के रूप में विभिन्न सूचनाएं प्राप्त करता है तथा स्वयं भी तथ्यों का अवलोकन करके दिए गए उत्तरों की सत्यता जांचने का प्रयत्न करता है।

वेदर्शन –

इसका तात्पर्य समस्त इकाईयों में से कुछ इकाईयों का चयन करता है। वास्तव में निदर्शन एक ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा हम समस्त इकाइयों में से कुछ इकाईयों का चयन अनेक स्वीकृत कार्य विधियों की सहायता से इस प्रकार करता है, जिससे चुनी गई इकाइयां संपूर्ण समग्र की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व कर इस विधि से कई लाभ हो सकते हैं।

साक्षात्कार –

प्रथमिक तथ्यों के संकलन करने के लिए यह एक अत्यधिक लोकप्रिय और बहु प्रचलित पद्धति है। साक्षात्कार दो व्यक्तियों के बीच पायी जाने वाली एक विशेष सामाजिक परिस्थिति है। जिसमें से एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के अंतर्गत दोनो व्यक्ति परस्पर उत्तर-प्रति-उत्तर करते हैं। एक अनुसंधान कर्ता दुसरा उत्तरदाता होता है।

मैंने भी अपने अध्ययन कार्य में साक्षात्कार प्रविधि का उपयोग किया, जिसे विषय से संबंधित जानकारियां प्राप्त करने में अधिक सहूलियत हुई, जो अत्यधिक विश्वासनीय तथा अधिक व्यवहारिक सावित हुई।

अध्याय चार

अध्ययन का उद्देश्य

व्यक्तियों, परिवारों या अन्य श्रेणी के लोगों का समाज के एक वर्ग (strata) से दूसरे वर्ग में गति सामाजिक गतिशीलता (Social mobility) कहलाती है। इस गति के परिणामस्वरूप उस समाज में उस व्यक्ति या परिवार की दूसरों के सापेक्ष सामाजिक स्थिति बदल जाता है।

सामाजिक गतिशीलता से अभिप्राय व्यक्ति का एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने से होता है। जब एक स्थान से व्यक्ति दूसरे स्थान को जाता है तो उसे हम साधारणतया आम बोलचाल की भाषा में गतिशील होने की क्रिया मानते हैं। परंतु इस प्रकार की गतिशीलता का कोई महत्व समाजशास्त्रीय अध्ययन में नहीं है। समाजशास्त्रीय अध्ययन में गतिशीलता से तात्पर्य एक सामाजिक व्यवस्था में एक स्थिति से दूसरे स्थिति को पा लेने से है जिसके फलस्वरूप इस स्तरीकृत सामाजिक व्यवस्था में गतिशील व्यक्ति का स्थान उँचा उठता है व नीचे चला जाता है। एक स्थान से उपर उठकर दूसरे स्थान को प्राप्त कर लेना, जो उससे उँचा है, निस्संदेह गतिशीलता है। सरल शब्दों में यह कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र में सामाजिक गतिशीलता का अभिप्राय है किसी व्यक्ति, समूह या श्रेणी की प्रतिष्ठा में परिवर्तन।

प्रायः इस प्रकार की गतिशीलता का उल्लेख मोटे तौर पर व्यवसायिक क्षेत्र तथा समाजिक वर्ग में परिवर्तन से होता है। अक्सर सामाजिक गतिशीलता को इस समाज में मुक्त या पिछड़ेपन का द्योतक माना जाता है। सामाजिक गतिशीलता के अध्ययन में गतिशीलता की दरें, व व्यक्ति की नियुक्ति भी शामिल की जाती है। इस संदर्भ में एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी के सामाजिक संदर्भ के तहत परिवार के सदस्य का आदान-प्रदान या ऊँचा उठना व नीचे गिरना शामिल है। एस एम लिपसेट तथा आर बेंडिक्स का मानना था कि औद्योगिक समाज के स्वामित्व के लिए सामाजिक गतिशीलता आवश्यक है। जे एच गोल्ड थोर्प ने इंग्लैंड में सामाजिक गतिशीलता की चर्चा करते हुए इसके तीन महत्वपूर्ण विशेषताओं की बात की है-

(क) पिछले 50 साल में गतिशीलता के दर में ज्यादा वृद्धि हुई है।

ख) मजदूर वर्ग की स्थिति में मध्यम तथा उच्च स्थिति में काफी परिवर्त्तन आया है।

ग) उच्च स्थान तथा मध्यम स्तर पर गतिशीलता में ज्यादा लचीलापन देखने में आया है।

सामाजिक गतिशीलता के प्रकार

क) क्षैतिज सामाजिक गतिशीलता (Horizontal Social Mobility)

जब एक व्यक्ति का स्थानान्तरण एक ही स्तर पर एक समूह से दूसरे समूह में होता है तो उसे क्षैतिज सामाजिक गतिशीलता कहते है। इस प्रकार की गतिशीलता में व्यक्ति का पद वही रहता है केवल स्थान में परिवर्त्तन आता है। उदाहरण के लिए यह कहा जा सकता है कि सरकारी दफ्तरों में कई बार रूटिन तबादले होते हैं जिसमें एक शिक्षक जो एक शहर में पढ़ा रहे थे, उन्हें उस शहर से तबादला कर दूसरे शहर में भेज दिया जाता है। इसी प्रकार सेना में काम कर रहे जवान का भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना बिना किसी पदोन्नति के एक रूटिन तबादला है।

(ख) लंबवत सामाजिक गतिशीलता (Vertical Social Mobility)

जब किसी व्यक्ति को एक पद से उपर या नीचे की स्थिति पर काम करने के लिए कहा जाता है तो वह लंबवत सामाजिक गतिशीलता कहलाती है। उदाहरण के लिए एक शिक्षक को पदोन्नति कर उसे प्रिसिंपल बना देना तथा एक सूबेदार को सेना में तरक्की देकर उसे कैप्टेन का पद देना लंबवत सामाजिक गतिशीलता के उदाहरण हैं। लंबवत सामाजिक गतिशीलता में अगर पद में उन्नति हो cसकती है तो पद में गिरावट भी देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए कैप्टेन के पद से हटाकर वापस एक जवान को सूबेदार बना देना भी संभव है जो लंबवत सामाजिक गतिशीलता के उदाहरण माने जा सकते हैं।

अध्याय पाँच

सारणी एवं विश्लेषण

देवगन गाँव प्राचीनकालीन कब्रों में प्रयुक्त विशाल पत्थरों को मेगालिथ कहा जाता

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

ा देवगन गाँव के लोग सैकड़ों वर्षों से इन दोनों सर्किल मेगालिथों को द्वारपाल बाबा के
पूजा करते आ रहे हैं?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

या देवगन इसके आसपास का इलाका करीब तीन दशक तक नक्सलियों के रेट जन के
जाना जाता था?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

या देवगन गाँव के *मुख्य* मन्दिर बाबर के शासनकाल मे मंदिरों व मुरतियो को नष्ट किया
होगा?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

5. क्या देवगन गाँव के अधिकांश स्मारक तथा मूर्तियां चेरो शासनकाल में स्थापित हुए?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

6. क्या देवगन गाँव के प्राचीन काल में यहां आदिम जनजातियों की बस्ती थी?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

7. .क्या मेदिनी राय का कार्यकाल प्रजा के लिए स्वर्ण युग था?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

8. क्या देवगन गाँव में एक सरकारी स्वस्थ केंद्र होना चाहिए?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

9. क्या रक्शेल और चेरो राजवंशों की कभी राजधानी रह चुका देवगन का अस्तित्व आज एक बस्ती के रूप में विद्यमान है?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

10. क्या देवगन गाँव के महिलाये आज भी शिक्षा से वंचित है?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

1. . क्या देवगन गाँव ग्रामीण लोग आज भी खेती पर निर्भर है?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

12. क्या देवगन गाँव के सरकारी स्कूल में बच्चों के लिए शिक्षा वयस्था अच्छा है?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

13. क्या देवगन गाँव के ग्रामीण लोग गाँव के साफ-सफाई पर ध्यान देते हैं?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

14. क्या देवगन गाँव में सामाजिक-आर्थिक विकास हो रहा है?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

15. क्या देवगन गाँव ग्रामीण लोग सरकार के तरफ से योजनए का लाभ ले पा रहे है?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

16. . क्या देवगन धाम में पुरातत्विक व ऐतिहासिक मंदिर अस्थल के विकास को लेकर सरकार प्रयास कर रही है?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

या देवगन धाम को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना चाहिए?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

या देवगन के इर्द-गिर्द लगभग एक दर्जन बस्तियों में आज भी रक्सेलों का निवास है?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

क्या चेरो कालीन पलामू की राजधानी रह चुका देवगन पहाड़ियों से आच्छादित होने के
बाह्य आक्रमण से महफूज था?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

क्या देवगन गाँव प्राकृतिक दृष्टि से सुंदर और रमणीक, भौगोलिक दृष्टि से समृद्ध और
क्त तथा सामरिक दृष्टि से मजबूत औ महफूज देवगन स्टेट की विशेषता थी?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

क्या देवगन गाँव लौह-अवशिष्ट मिलने का तात्पर्य है कि यहां लोहे गलाने की भट्ठियां रहा

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

क्या देवगन गांव के महिलाओं के रोजगार के लिए प्रोत्साहन करना चाहिए?

हाँ	नही	पता नही
) प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

वैश्वीकरण दृष्टिकोण से देवगढ़ गांव में भी विकास हो रहा है?

हाँ	नही	पता नही
0 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

ी के समय में शहर के अपेक्षा या तुलना में देवगन गांव के कितना सामाजिक परिवर्तन रहा है?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10 प्रतिशत

से देखना साथ ही साथ जो गतिशीलता समाज है उस गतिशीलता के आधार पर क्या गांव में भी गतिशीलता देखने को मिल रही है?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10प्रतिशत

भारत में क्या अत्याधिक जनसंख्या गांव में बस्ती हैं?

हाँ	नही	पता नही
80 प्रतिशत	10 प्रतिशत	10प्रतिशत

अध्याय छः

सुझाव एवं निष्कर्ष

लामू के देवगन गांव में मित्रा गन के साथ समाजशास्त्र शिक्षक राजमोहन सर देवगन
ब भूमि पर भ्रमण किया और पाया की ब्राह्मण की जहां छोटी- छोटी पहाड़िया नदी
पेड़ो झुरमुथो से घिरा गांव देवगन था उसी गांव की दृश्य भ्रमण के साथ हम सबो
ीन पलामू की अदभुत किला के धरोहर रूपी प्राचीन राधे कृष्णा का प्रतिमा
पित एक भव्य मंदिर मिला जो देवगन धाम के नाम से प्रचलित है। फिर हम सब के
दिर की ओर गये जहां देखें सुर में वादियों की गोद में अवस्थित यह ऐतिहासिक गांव
र मध्यकालीन वैभव के ध्वंसावशोषो धराशाही मंदिर तथा सबूत एवं खंडित मूरतयों से
डा है तो दसरी और खरवार रक्सेलो चेरो मुगलों एवं अंगरेजों का मूल साक्षी भी रहा
र से निकलकर शिव मंदिर के पास तालाब था तालाब में पानी भर था तालाब की
ी खेती की सिंचाई किए जाते हैं और मछली पालन भी कर सकते हैं और हम सब गांव
र गये देवगन का गाँव की गाँव के राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय में गये स्कूल के
ों से देवगन और स्कूल के शिक्षा के बारे में बातचीत किते प्राथमिकी स्कूल के
लये की और गए स्कूल का शौचालय चालू हलत में था और बच्चे के पानी पीने का भी
था था और एक कुडादन भी था स्कूल में चुनाव के लिए मतदान केंद्र है और वहां में
ा और पुरुषों की अच्छी खासी जनसंख्या है देवगन के गांव के लगभाग जनसंख्या 1300
स पास है प्राथमिकी स्कूल से निकल कर गांव की ओर गए।

देवगन गांव पहाड़ों से घिरा हुआ है और जंगल पहाड़ जो है एक समय अर्थ स्तंभ हुआ
था आर्थिक मामले में तो यदि वन संपदा को संरक्षित किया जाए तो हम आर्थिक रूप से
त हो सकते हैं गांव के चारों तरफ जंगल है इसलिए पशुपालन के विशेष स्कोप नगर
है पशुपालन के मतलब गाय पालन भैंस पालन और भेड़ पालन इससे नया रोजगार

ृजन हो सकता है छतरपुर के इर्द-गिर्द कई डैम है उसमें यदि डेम में मछली पालन परंपरागत ा करके यदि हम वैज्ञानिक विधि से मछली पालन का परीक्षण लेकर हम युवाओं को ोत्साहित करें तो मछली पालन का रोजगार सर्जन हो सकता है उससे रोजगार को जोड़ा जा कती है युवाओं को जोड़ा जा सकता है देवगन में कई बांध है वहां से समुचित ठिकाने के यवस्था करके धूप के दिनों में हरी साग सब्जी उगाया जा सकता है इस तरह से गांव में ार्थिक रूप से और समृद्ध हो सके और गांव में स्वास्थ्य की असुविधा होती है और छतरपुर नुमंडल आते हैं अपना स्वास्थ्य चेकअप कराने तो स्वास्थ्य के क्षेत्र में वहां हम उप स्वास्थ्य द्र के रूप में 10 युद्ध के रेफर अस्पताल हम देवगन गांव में दे सकते हैं वहां पर वर्तमान यवस्था के अनुसार उत्क्रमित हाई स्कूल है जिसको देखते हुए प्राथमिक और मध्य विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में इसको आगे पहले की जा सकती है देवगन गांव प्राचीन गांव है ऐतिहासिक जगह है इससे यादी दर्शनीय यदि पर्यटन स्थल के रूप में विकास किया जाए तो रोजगार सृजन भी होगा और आर्थिक रूप से देवगन समृद्ध होगा।

देवगन डैम में यदि नाव के माध्यम से वोट उपलब्ध कराई जाए तो सैलानी लोग जो बाहर से देखने आएंगे वह वोट पर बैठकर प्राकृतिक घटा का आनंद ले पाएंगे और वहां एक आय का साधन भी सृजन होगा आज की जहां सरकार कहती है कि हम डिस्टलाइजेशन हो रहा है पर एक भी नेटवर्क नहीं है। यदि 4G यदि नेटवर्क उपलब्ध होता है तो लोगों में कम्युनिकेशन बढ़ेगा और संचार सुविधा बढ़ेगी और सीएसपी और तमाम तरह की जो फोटो कॉपी और वो ऑनलाइन कैसे और ऑनलाइन फॉर्म भरने की जो तमाम सुविधाएं हैं वह भी प्रसारित हो जाएंगी जिससे वहां के युवाओं को रोजगार भी मिलेगा और सुविधा भी उपलब्ध होगा।

देवगन गांव के लोग बड़े ही सामाजिक शांतिप्रिय लोग हैं यहां के लोग बहुत मेहनती
ादमी हैं मेहनत करके अपना जीवन यापन करते हैं सामाजिक गतिशीलता के दौर में
ामाजिक परिवर्तन के दौर में यहां के लोग रोजी-रोटी के तलाश में बाहर भी प्रवेश करते हैं।
ौर बदलते दौर में शिक्षा के क्षेत्र में अव्वल स्थान प्राप्त करके लोगों में पढ़ने और पढ़ाने की
च्छा प्रबल हो रही है और लोग अपने बच्चों को पढ़ा रहे हैं और शिक्षा के प्रति जागरूक हो रहे
ं यहां के जो महिलाएं हैं जो अपने स्वास्थ्य के प्रति कर्तव्य के प्रति सचेत हैं और अपने
ामीण प्रवास और ग्रामीण संस्कृति को ग्रहण करते हुए वे आज के दौर में पश्चिमी सभ्यता
ंस्कृति वैश्वीकरण के इच्छा को अनुकरण कर रहे हैं बिल्कुल ग्रामीण प्रवास में रहते हुए भी वे
ाज भी उज्जवल योजनाओं के दावे के भी देवगन गांव के महिलाएं गोएथे झुरी लकड़ी के
ाध्यम से खाना बना रहे हैं।

अध्याय सात

परिशिष्ट

(क) भारतीय समाज की संरचना एव परिवर्तन

(ख) ग्रामीण समाजशास्त्र

(ग) पलामू का इतिहास

(घ) चेरो राजवंश का इतिहास

संदर्भ फोटो

बाबा साकेत बिहारी दास की रूचि आध्यात्मिक के साथ-साथ रचनात्मक कार्यों में त्यधिक है। इनके सौजन्य से देवगन में राधा अष्टमी, भगवान जगन्नाथ रथयात्रा, छठ होत्सव, सप्तदिवसीय मकर संक्रांति मेला, श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव आदि की भव्य ंपरा प्रारंभ हुई। बाबा की सोच सकारात्मक और रचनात्मक दोनों है। उनकी कोशिश है कि वगन में कालेज, स्कूल, अनाथालय, वृद्धाश्रम, गोशाला तथा म्यूजियम की स्थापना हो। दो र्जन से अधिक यज्ञ करा चुके बाबा जन-जागरण अभियान चलाकर देवगन को शीर्ष पर लाना ाहते हैं। वे देवगन धाम के लिए पूर्ण समर्पित हैं।

देवगनधाम में राधे- कृष्णा की स्वर्ण प्रतिम

गौशाला

देवगन गांव की विद्यालय

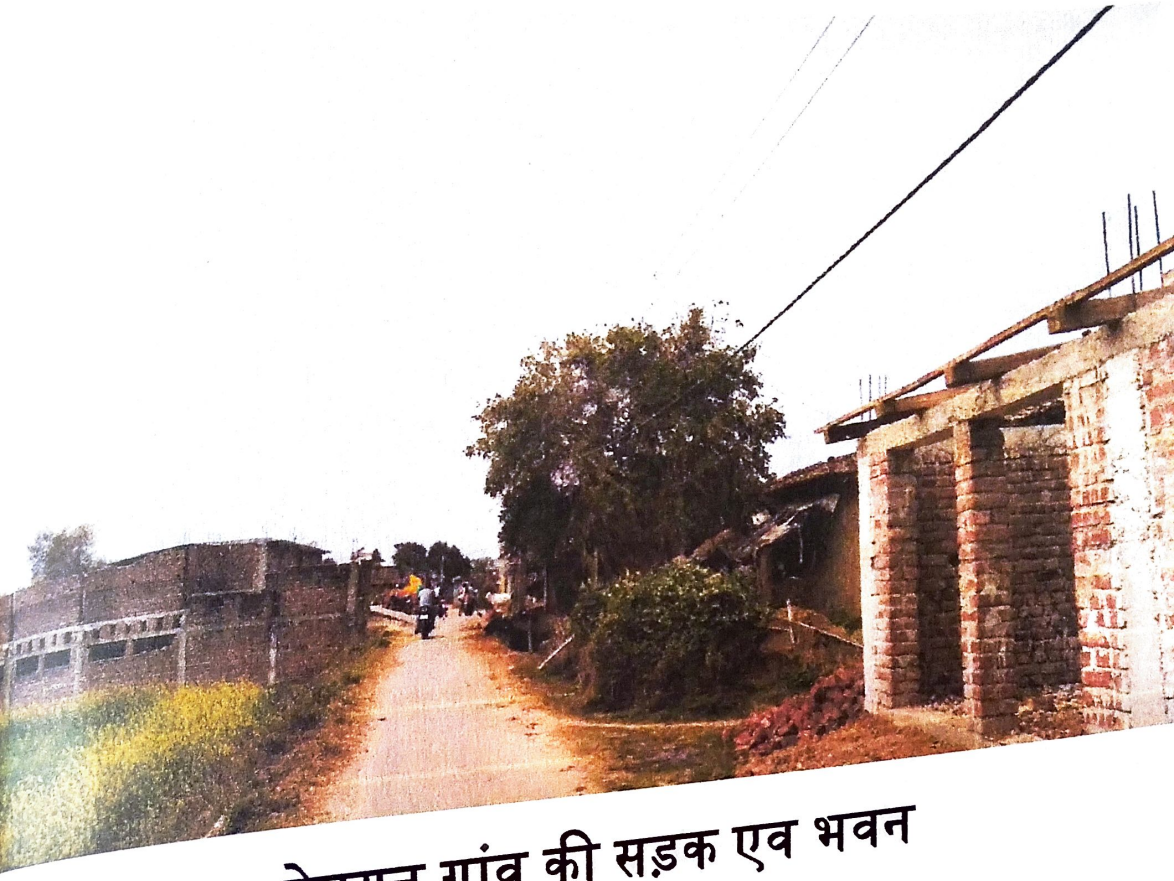

देवगन गांव की सड़क एव भवन

देवगन गांव की रबी फसलें

देवगन गांव की तलाब को गुलाबचंद प्रसाद अग्रवाल कॉलेज के

छात्र द्वारा शैक्षणिक भ्रमण

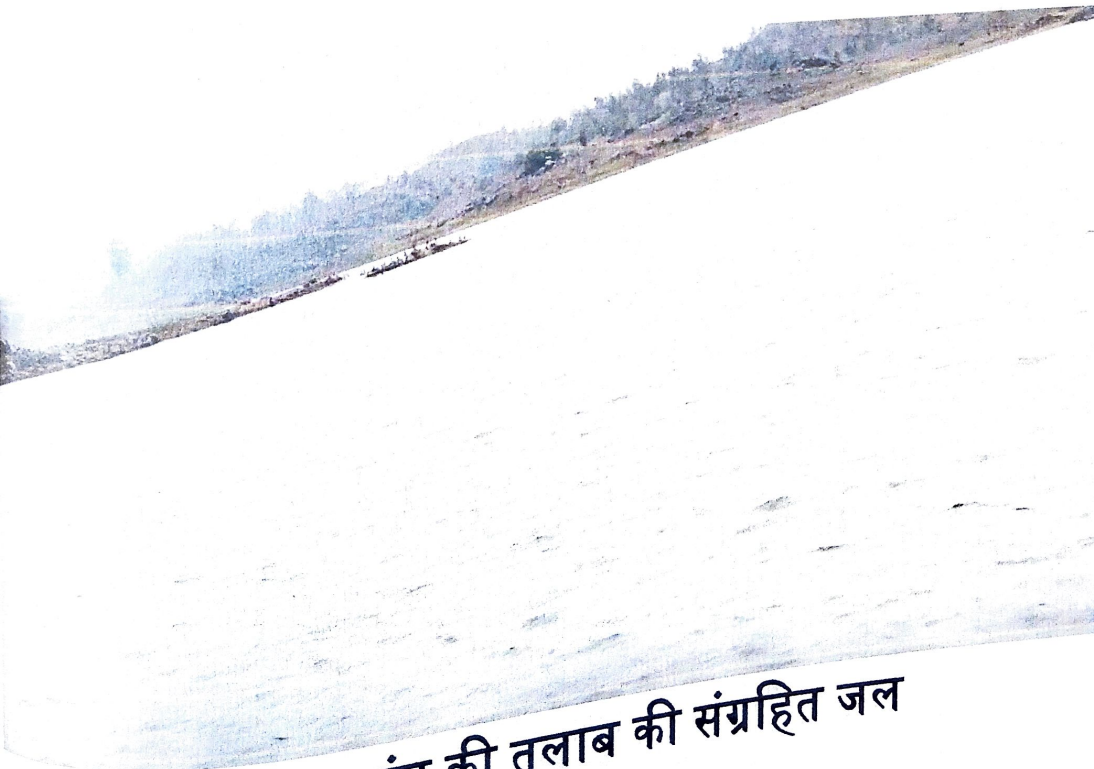

देवगन गांव की तलाब की संग्रहित जल

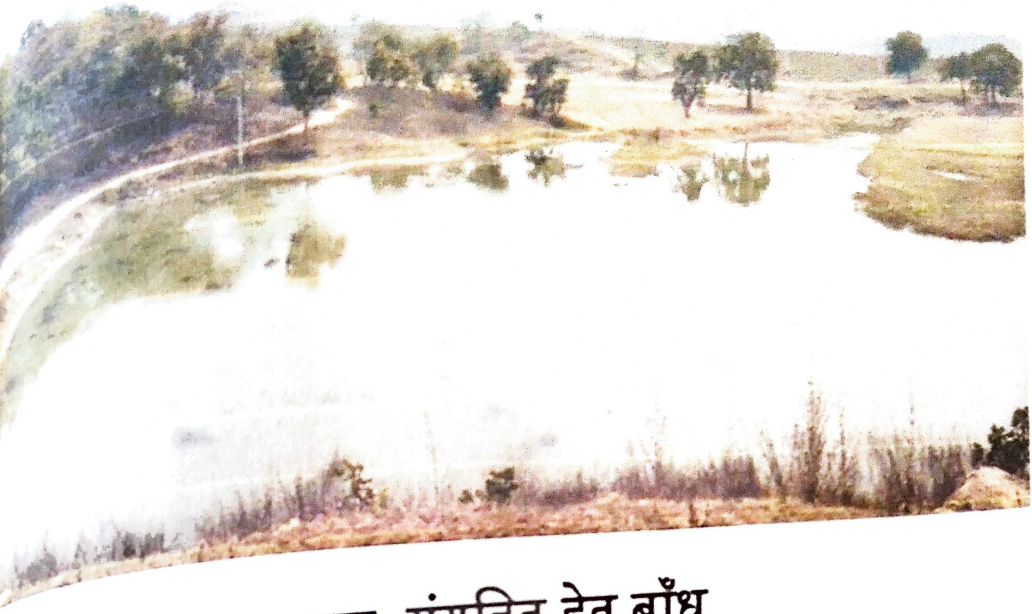

जल संग्रहित हेतू बाँध

राजशास्त्र शिक्षक के साथ छात्र / छात्रा देवगन धाम की भ्रमण दृश्य

भू मैप

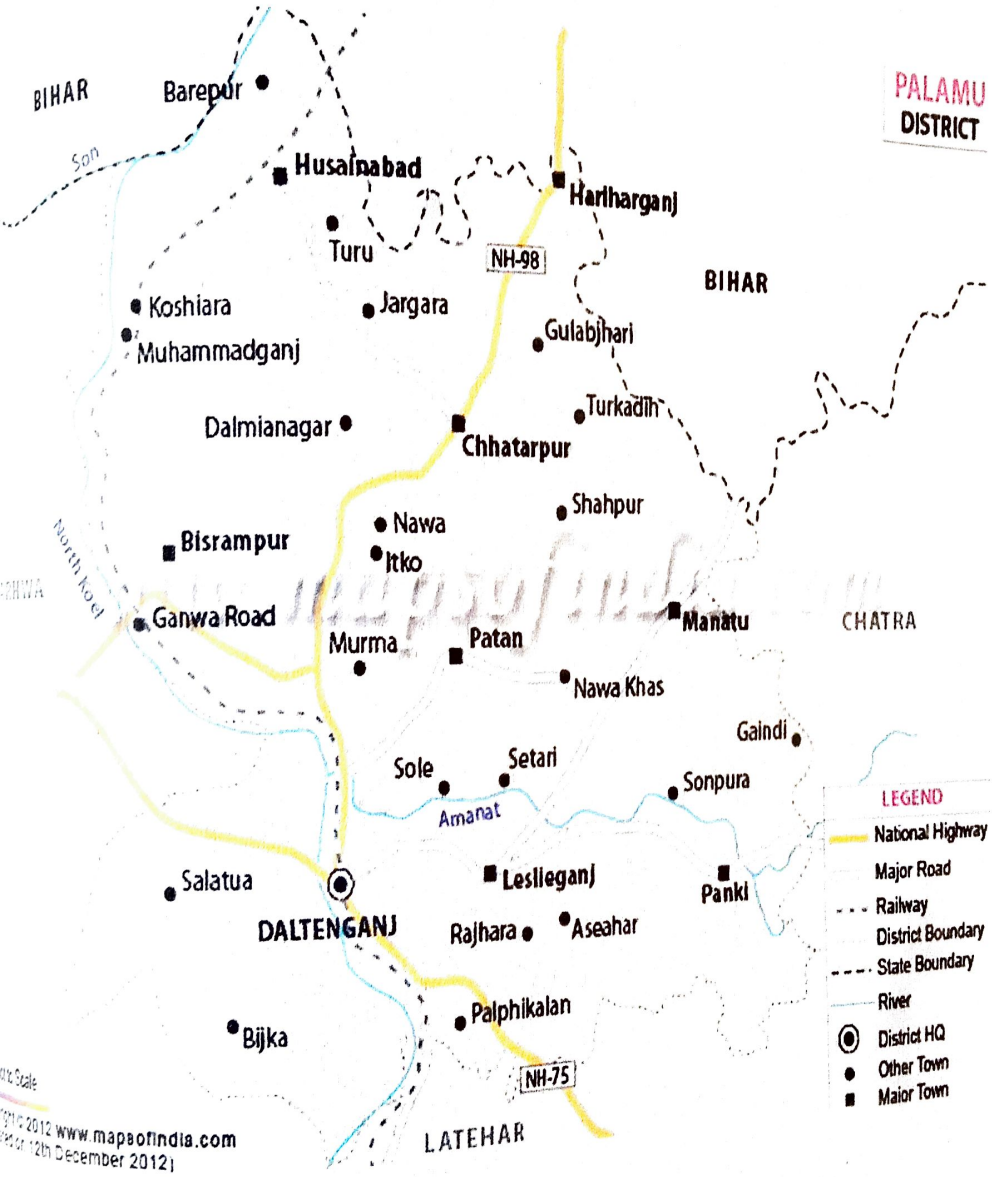
BIHAR
Barepur
Son
Husainabad
Harlharganj
PALAMU
DISTRICT
Turu
NH-98
BIHAR
Koshiara
Jargara
Muhammadganj
Gulabjhari
Turkadih
Dalmianagar
Chhatarpur
Shahpur
Nawa
Bisrampur
Itko
North Koel
Ganwa Road
Murma
Patan
Manatu
CHATRA
Nawa Khas
Gaindi
Sole
Setari
Sonpura
Amanat
LEGEND
National Highway
Major Road
Railway
District Boundary
State Boundary
River
District HQ
Other Town
Maior Town
Salatua
Lesliganj
Panki
DALTENGANJ
Rajhara
Aseahar
Palphikalan
Bijka
NH-75
LATEHAR